**इतिहास विषय हेतु विकसित प्रमाप की प्रभाविता का विद्यार्थियों**

**की प्रमाप के प्रति प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन**  
 डॉ. निशा पंवार  
 प्रिंसिपल एस्पायर इंस्टीट्यूट   
 अनुराधा पारीक  
 एम.एड स्कॉलर अरिहंत कॉलेज  
  
\*\*सारांश\*\*  
यह ’शोध पत्र‘ इतिहास विषय हेतु विकसित प्रमाप की प्रभाविता का विद्यार्थियों की प्रमाप के प्रति प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन पर आधारित है। यह शोध प्रयोगात्मक शोध पर आधारित है। इस शोध अध्ययन हेतु राजस्थान प्रदेश से संबंधित स्कूलों के 30 विद्यार्थियों का चयन किया गया। नमूने का चयन जानबूझकर नमूने की तकनीक द्वारा किया गया। प्राप्त डेटा के लिए स्वनिर्मित प्रतिक्रिया मापनी का उपयोग किया गया। शोध का उद्देश्य इतिहास विषय हेतु विकसित प्रमाप की प्रभाविता का विद्यार्थियों की प्रमाप के प्रति प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन करना था। प्राप्त निष्कर्षों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत का उपयोग किया गया। शोध अध्ययन के परिणाम से ज्ञात हुआ कि प्रमाप की प्रभाविता का विद्यार्थियों की प्रमाप के प्रति प्रतिक्रिया सकारात्मक पाई गई।  
  
\*\*परिचय\*\*  
शिक्षा मानव जीवन का आधारभूत स्तंभ है, जो व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास को आकार देती है। यह केवल ज्ञान का संचरण नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और समाज के प्रति जिम्मेदारी का बोध कराने का एक माध्यम है। शिक्षा का मूल उद्देश्य अधिगम को बढ़ावा देना है, जो एक सतत और क्रियाशील प्रक्रिया है। अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अनुभव, अभ्यास, और पर्यवेक्षण के आधार पर ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों को अर्जित करता है। प्रमाप एक ऐसी स्व-अधिगम सामग्री है, जो पूरी तरह से स्वतंत्र और स्वायत्त होती है। यह व्यक्तिगत शिक्षण का माध्यम है, जिसमें विषयवस्तु को व्यवस्थित और क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। जिसमें विद्यार्थी अपनी क्षमता, रुचि, और गति के अनुसार अध्ययन करता है।  
  
\*\*शोध का उद्देश्य\*\*  
व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर प्रत्येक विद्यार्थी की अधिगम गति भिन्न होती है, यह नवीन शिक्षण विधि अर्थात प्रमाप उनकी क्षमता के अनुरूप सीखने का अवसर प्रदान करती है। सरकारी विद्यालयों में सीमित संसाधनों के कारण समान अवसर उपलब्ध नहीं हो पाते, ऐसे में प्रमाप सीमित संसाधनों में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सहायक है। यह रुचिकर और आकर्षक ढंग से अधिगम सामग्री का प्रस्तुतीकरण करता है जिससे विद्यार्थियों को सीखने में अधिक रुचि उत्पन्न होती है। यह जटिल विषयों को सरलता से समझने में मदद करता है। इसके उपयोग से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है, जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बेहतर होती है। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का विकास होता है और वे अपनी रुचि, क्षमता एवं आवश्यकता के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं। प्रमाप इन क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करता है जो छात्रों को सरल प्रभावी एवं स्व अध्ययन के लिए आधार प्रदान करता है।  
  
\*\*समीक्षा साहित्य\*\*  
संबंधित साहित्य के अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि प्रमाप से संबंधित कई कार्य हुए हैं जैसे - सतगिरा (2014), चौधरी कंचन (2016), स्मिथ (2016), लायंस, माग्दा और रिकसन (2016), माफसा, भेभे और रगुबे (2016), सगर (2017), मैत्रा (2017), पनेरे (2017), श्रीवास्तव और व्यास (2017), नूरहयाती (2017), राजतिलक राउल (2020), जगन (2020) आदि ने शोध कर प्रमाप प्रभाविता का अध्ययन किया। उपर्युक्त शोधों से ज्ञात हुआ है कि शोधकर्ताओं ने अन्य विषयों में प्रमाप की प्रभाविता से संबंधित कार्य किए हैं लेकिन इतिहास विषय पर प्रमाप के विकास और प्रभाविता पर कोई कार्य प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए शोधकर्ता द्वारा इस शोध अध्ययन का चयन किया गया।  
  
\*\*उद्देश्य\*\*  
इतिहास विषय हेतु विकसित प्रमाप की प्रभाविता का विद्यार्थियों की प्रमाप के प्रति प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन।  
  
\*\*कार्यप्रणाली\*\*  
इस शोध अध्ययन हेतु राजस्थान प्रदेश से संबंधित 2 विद्यालयों के 30 विद्यार्थियों का चयन किया गया। नमूने का चयन जानबूझकर नमूने की तकनीक द्वारा किया गया।  
  
\*\*उपकरण\*\*  
स्वनिर्मित प्रतिक्रिया मापनी का उपयोग किया गया। प्रतिक्रियाओं के आकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा प्रतिक्रिया मापनी का निर्माण किया गया। विकसित प्रतिक्रिया मापनी द्वारा विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का आकलन किया गया। इस प्रतिक्रिया मापनी में कुल 12 कथन सम्मिलित किए गए थे, जिनमें 6 सकारात्मक और 6 नकारात्मक दोनों प्रकार के कथन थे। प्रतिक्रिया मापनी के प्रत्येक कथन के सम्मुख पाँच विकल्प— पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत एवं पूर्णतः असहमत दिए गए थे।  
  
\*\*प्राप्त निष्कर्षों का विश्लेषण\*\*  
प्रतिशत मान विधि के द्वारा प्रदत्त का विश्लेषण किया गया।

\*\*तालिका 1: प्रतिशत मान का सारांश\*\*  
  
|

|  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| **क्रम संख्या** | **कथन** | **पूर्णतः सहमत (%)** | **सहमत (%)** | **अनिश्चित (%)** | **असहमत (%)** | **पूर्णतः असहमत (%)** |
| 1 | प्रमाप के अध्ययन से विषयवस्तु स्वतः स्पष्ट हो जाती है | 35.82 | 40.76 | 7.81 | 7.81 | 7.81 |
| 2 | प्रमाप में प्रस्तुत विषयवस्तु का प्रस्तुतिकरण क्रमबद्ध नहीं है | 39.86 | 33.88 | 8.75 | 8.75 | 8.75 |
| 3 | प्रमाप रुचिपूर्ण है | 40.22 | 33.68 | 8.70 | 8.70 | 8.70 |
| 4 | प्रमाप में दिए गए उदाहरण विषयवस्तु से संबंधित नहीं हैं | 36.14 | 38.96 | 8.30 | 8.30 | 8.30 |
| 5 | प्रमाप में दिए गए चित्र और उदाहरण उपयोगी हैं | 31.83 | 45.66 | 7.50 | 7.50 | 7.50 |
| 6 | प्रमाप में वाक्यों की रचना अस्पष्ट है | 32.14 | 43.26 | 9.20 | 7.20 | 8.20 |
| 7 | प्रमाप में दिए गए चित्र संकल्पनाओं को स्पष्ट करने में सहायक हैं | 40.10 | 38.45 | 7.90 | 6.55 | 7.00 |
| 8 | प्रमाप की विषयवस्तु में निरंतरता है | 36.60 | 39.66 | 7.90 | 8.20 | 7.64 |
| 9 | प्रमाप में स्थित चित्र विषयवस्तु को स्पष्ट करने में मदद नहीं करते | 30.22 | 42.45 | 8.11 | 9.00 | 10.22 |
| 10 | प्रमाप में प्रस्तुत विषयवस्तु का संगठन क्रमबद्ध है | 37.90 | 38.85 | 7.00 | 8.60 | 7.65 |
| 11 | प्रमाप में दी गई विषयवस्तु सरल एवं स्पष्ट है | 39.75 | 36.70 | 7.45 | 8.55 | 7.55 |
| 12 | प्रमाप अधिगमकर्ता/विद्यार्थियों के स्तर योग्य नहीं है | 32.85 | 39.50 | 8.25 | 9.10 | 10.30 |

उपरोक्त तालिका के कथनों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकला कि अधिकांश छात्रों ने प्रमाप को एक उपयोगी, रुचिकर और प्रभावी शिक्षण सामग्री के रूप में स्वीकार किया।  
  
\*\*संदर्भ\*\*  
- सातगिरा, आर. (2014) - छात्रों का स्व-अध्ययन: जीवन पर्यंत सीखने की प्रक्रिया।  
- लोयन्स, माग्दा, & रिकसन (2016) - स्व-निर्देशित अधिगम: तेजी से बदलती दुनिया में एक आवश्यक कौशल।  
- माफसा, सी., भेभे, एस., और रगुबे, डी. (2016) - खुला एवं दूरस्थ अधिगम (ODL) छात्रों के लिए स्व-अध्ययन सामग्री विकसित करने की कला पर चर्चा।